विशद
सुपार्श्वनाथ विधान

मध्य-ह्रीं
प्रथम-4
द्वितीय-8
तृतीय-16
चतुर्थ-32
पंचम-64

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - **विशद सुपार्श्वनाथ विधान**

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - द्वितीय-2013 ● प्रतियाँ :1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विदर्शसागरजी महाराज
ब्र. लालजी भैया, ब्र. सुखनन्दनजी भैया

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी
सपना दीदी

संयोजन - ब्र. किरण, आरती दीदी, उमा दीदी ● मो. 9829127533

प्राप्ति स्थल

सुपार्श्वनाथ मित्र मण्डल

बी-437, शास्त्री नगर, भीलवाड़ा

मो. 9829744293, 9351745669, 9414114377

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

कृतिकार के प्रति समर्पण

आज हमारा परम सौभाग्य है कि भोगवादी युग में त्याग, तपस्या की मूर्ति बन अपने ज्ञान चक्षु से हम अज्ञानी जीवों को संसार पार जाने के लिए खेवटिया वन निरन्तर अग्रणी हो रहे हैं।

ऐसे क्षमामूर्ति साहित्य सृजनकर्त्ता पूज्य आचार्य 108 **श्री विशदसागरजी मुनिराज** हमारे ऊपर एक और उपकार किया है। सातवें तीर्थंकर उपसर्गजयी, कालजयी, 1008 श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का विधान रचकर आचार्य श्री ने अपने असीम ज्ञान के अथाह सागर की कुछ बूँदें इस विधान के माध्यम हम भोले-भाले प्राणियों को रसास्वादन करने का सुअवसर प्रदान किया।

अनेक रचनाकारों ने अनेक विधानों का सृजन किया परन्तु आचार्य विशदसागरजी महाराज ने ऐसे विधानों की रचना की है जहाँ अन्य रचनाकारों की सोच थक चुकी थी; परन्तु आचार्य श्री सृजन कर्मठता का जीवंत उदाहरण है यह 'सुपार्श्वनाथ विधान'।

जहाँ चौबीसों तीर्थंकरों की समान रूप से भक्ती की जाती है वहीं सुपार्श्वनाथ पार्श्वनाथ भगवान की विशेष भक्ति लोग करते हैं क्योंकि इनके गुण स्तवन करने से मन के अन्दर उपसर्गों से सामने करने की शक्ति मिलती है। इन तीर्थंकरों ने बड़े ही शांत भाव से उपसर्गों को सहा और अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए उसी प्रकार हम इनकी भक्ति करके कठिन से कठिन चुनौती का सामना कर सकते हैं। ऐसी भावना रखकर आचार्यश्री ने 'श्री सुपार्श्वनाथ विधान' की रचना की है, जो सर्व जनों को मंगलकारी एवं कल्याणकारी होगी। इस विधान के माध्यम से भगवान मूल गुणों के साथ उभय गुणों का भी अच्छा विवेचन किया है।

जैसे- **गती मार्गणा खोने वाले, प्राणी जग में रहे निराले।**
अनुपम केवलज्ञान जगाते, सारे जग से पूजे जाते।।

भगवान जगतपूज्य क्यों हैं, क्योंकि वह केवलज्ञान आदि गुणों के धारी हैं एवं गति मार्गणा आदि दोषों से रहित हैं। विधान में अत्यन्त सरल भाषा का उपयोग किया गया है ताकि लोगों को समझने में सरलता रहे एवं छोटे-छोटे छंदों का उपयोग किया गया है ताकि लोग समय के अभाव में भी विधान पूर्ण कर सकें एवं भगवद् भक्ति से जुड़कर आत्मकल्याण कर सके।

आचार्यश्री के लिए नमन्, वन्दन।

प्रतिष्ठाचार्य - पं. अरविन्दकुमार जैन शास्त्री 'आदर्श', रोहिणी दिल्ली

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् !।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल,होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा– मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

सिद्ध स्तवन

सोरठा– तीर्थ क्षेत्र निर्वाण, मंगलमय मंगल परम।
करते हम गुणगान, मुक्त हुए जिन सिद्ध का।।

जीवादि तत्त्वों का जिसने, समीचीन श्रद्धान किया।
सम्यक् ज्ञान आचरण पाकर, निज आतम का ध्यान किया।।
संवर और निर्जरा करके, अष्ट कर्म का नाश किया।
अनन्त चतुष्टय को पाकर के, केवलज्ञान प्रकाश किया।।1।।

करके योग निरोध आपने, कर्मों का कीन्हा संहार।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, आतम का कीन्हा उद्धार।।
किए कर्म का नाश जहाँ वह, बना तीर्थ अतिशय पावन।
कहलाए निर्वाण क्षेत्र वह, सर्व लोक में मन भावन।।2।।

संत साधना से तीर्थों का, कण–कण पावन हुआ अहा।
पार हुआ भव सागर से वह, अतः क्षेत्र वह तीर्थ कहा।।
तीर्थ क्षेत्र की रज को प्राणी, अपने शीश चढ़ाते हैं।
श्रद्धा सहित वन्दना करके, अनुपम जो फल पाते हैं।।3।।

तीर्थ क्षेत्र का वन्दन करके, तीर्थ रूप हम हो जावें।
कर्माश्रव हो नाश हमारा, भव वन में न भटकावें।।
संत और भगवन्तों के हम, पथगामी बन जाएँ अहा।
उनके गुण पा जाएँ हम भी, अन्तिम यह उद्देश्य रहा।।4।।

संत साधना करके अपने, करते हैं कर्मों का नाश।
रत्नत्रय के द्वारा करते, निज आतम का पूर्ण विकाश।।
मोक्ष महाफल 'विशद' प्राप्त कर, बन जाते हैं अनुपम सिद्ध।
शाश्वत सुख पाने वाले वह, हो जाते हैं जगत प्रसिद्ध।।5।।

श्री सुपार्श्वनाथ पूजन

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन् करते प्रभो, आये खाली हाथ।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

हम जन्म जन्म के प्यासे हैं, जल से निज प्यास बुझाई है।
मम प्यास शांत न हो पाई, अतएव शरण तव पाई है।।
न जन्म मरण होवे फिर–फिर, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप से तप्त हुए, चन्दन से शीतलता पाई।
आताप शांत न हुआ प्रभो, अतएव शरण हमने पाई।।
हो भव आताप का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन गंध चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव–भव में पद की लालच से, अपना पुरुषार्थ गँवाया है।
पर अक्षय शुभ अविनाशी पद, न हमें कभी मिल पाया है।।
अब अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह अक्षत धवल चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

हम काम अग्नि की ज्वाला में, सदियों से जलते आये हैं।
न काम वासना शांत हुई, हमने कई जन्म गंवाएँ हैं।।

हो काम बाण विध्वंस प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पुष्पित पुष्प चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भोजन हमने दिन रात किया, न क्षुधा शांत हो पाई है।
पुद्गल ने पुद्गल को जोड़ा, न चेतन की सुधि आई है।
हो क्षुधा रोग का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, ताजा नैवेद्य चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह जाल में अटक रहे, न मुक्ती उससे मिल पाई।
इस तन के साज सम्हालों में, न आतम की निधि खिल पाई।
हो मोह अंध का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन दीप जलाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों के बन्धन से अब तक, स्वाधीन नहीं हो पाए हैं।
हमने संसार सरोवर में, फिर-फिर कर गोते खाए हैं।
हो अष्ट कर्म का नाश प्रभो, हम यही भावना भाते हैं।
अत एव चरण में जिन सुपार्श्व, यह मनहर धूप जलाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोक्ष महाफल न पाया, फल और सभी हमने पाए।
हम सर्व लोक में भटक लिए, अब नाथ शरण में हम आए।
हो मोक्ष महाफल प्राप्त हमें, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, हम फल यह विविध चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

संसार सुखों की चाहत में, मन मेरा बहु ललचाया है।
हम भ्रमर बने भटके दर-दर, पर पद अनर्घ न पाया है।
अब प्राप्त हमें हो पद अनर्घ, हम यही भावना भाते हैं।
अतएव चरण में जिन सुपार्श्व, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

शुक्ल पक्ष भादव की षष्ठी, हुई लोक में मंगलकार।
श्री सुपार्श्व माता वसुन्धरा, के उर आ कीन्हें उपकार।।
अर्घ्य चढ़ाते विशद भाव से, बोल रहे हम जय-जयकार।
शीश झुकाकर वंदन करते, प्रभु के चरणों बारम्बार।।

ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी तिथि को, श्री सुपार्श्व जी जन्म लिए।
सुप्रतिष्ठ नृप माता पृथ्वी, को आकर प्रभु धन्य किए।।
जन्म कल्याणक की पूजा हम, करके भाग्य जगाते हैं।
मोक्षलक्ष्मी हमें प्राप्त हो, यही भावना भाते हैं।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

ज्येष्ठ सुदी द्वादशी सुहावन, श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थेश।
केशलोंच कर दीक्षा धारे, प्रभु ने धरा दिगम्बर भेष।।
हम चरणों में वन्दन करते, मम् जीवन मंगलमय हो।
प्रभु गुण गाते हम भाव सहित, अब मेरे कर्मों का क्षय हो।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्वाहा।

(चौपाई)

षष्ठी फाल्गुन की अंधियारी, चार घातिया कर्म निवारी।
जिन सुपार्श्व ने ज्ञान जगाया, इस जग को संदेश सुनाया।।
जिस पद को प्रभु तुमने पाया, पाने का वह भाव बनाया।
भाव सहित हम भी गुण गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ कृष्ण फाल्गुन सप्तमी को, जिन सुपारसनाथ जी।
मोक्ष श्री सम्मेद गिरि से, पाए मुनि कई साथ जी।।
हम कर रहे पूजा प्रभु की, श्रेष्ठ भक्ति भाव से।
मस्तक झुकाते जोड़ कर द्वय, प्रभु पद में चाव से।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – जिन सुपार्श्व की अब यहाँ, गाने को जयमाल।
भक्त चरण में आए हैं, मिलकर बालाबाल।।

(काव्य छन्द)

श्री सुपार्श्व जिनराज, सर्व दुखों के हर्ता।
भक्तों के सरताज, सौख्य समृद्धि कर्त्ता।।
भव रोगों से तृप्त, जीव के हैं प्रभु त्राता।
जिन अनाथ के नाथ, जगत को देते साता।।
नृप प्रतिष्ठ के लाल, पृथ्वी देवी माता।
नगर बनारस जन्म, लिए जिन भाग्य विधाता।।
षष्ठी भादव शुक्ल, गर्भ में आये स्वामी।
अन्तिम पाये गर्भ, मोक्ष के हो अनुगामी।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जन्मे श्री जिन देवा।
करते सह परिवार, इन्द्र जिनवर की सेवा।।
स्वर्गों से सौधर्म इन्द्र, ऐरावत लाया।
पाण्डुक शिला पे जाके, प्रभु का न्हवन कराया।।
स्वस्तिक देखा चिन्ह, इन्द्र ने दांये पग में।
जिन सुपार्श्व का जयकारा, गूंजा इस जग में।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को, जिनवर संयम धारे।
केशों का लुन्चन करके, प्रभु वस्त्र उतारे।।
छठी कृष्ण फाल्गुन को, घाती कर्म नशाए।
अक्षय अनुपम अविनाशी, प्रभु ज्ञान जगाए।।
सातें कृष्ण फाल्गुन को, प्रभु जी मोक्ष सिधाए।
तीर्थराज सम्मेद शिखर से, मुक्ति पाए।।
हे सुपार्श्व ! तव चरणों में, हम शीश झुकाते।
विशद मोक्ष हो प्राप्त हमें, हम तव गुण गाते।।

दोहा – पार्श्वमणि सम हैं प्रभु, जिन सुपार्श्व है नाम।
हमको भी निज सम करो, शत्–शत् बार प्रणाम।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

(अडिल्य छन्द)

जिन सुपार्श्व हमको मुक्तिवर दीजिए, भव बाधा मेरी जिनवर हर लीजिए।
चरण कमल में करते हैं हम अर्चना, तीन योग से पद में करते वन्दना।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः (संज्ञा विनाशक)

दोहा– चऊ संज्ञाए नाशकर, जग में हुए महान।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, करो मेरा कल्याण।।

प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन करते प्रभो, आये खाली हाथ।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

भोजन की वाञ्छा रखते हैं, तीन लोक में सारे जीव।
संज्ञा वह आहार प्राप्त कर, आश्रव करते सदा अतीव।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।1।।

ॐ ह्रीं आहार संज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु देख भयानक कोई, भय से हो जाते भयभीत।
भय संज्ञा को पाने वाले, होते नहीं किसी के मीत।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।2।।

ॐ ह्रीं भय संज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काम वासना से व्याकुल हो, भटक रहा सारा संसार।
मैथुन संज्ञा पाने वाले, दुःख उठाते यहाँ अपार।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।3।।

ॐ ह्रीं मैथुन संज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्छा से मूर्छित होकर के, भटक रहे हैं जग के जीव।
परिग्रह संज्ञा पाने वाले, आश्रव करते यहाँ अतीव।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।4।।

ॐ ह्रीं परिग्रह संज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आहारादि संज्ञाओं को पाकर, जग के जीव प्रधान।
कर्म बन्ध कर दुःख भोगते, जन्म मरण कर यहाँ महान्।।
केवलज्ञानी तीर्थंकर जिन, संज्ञा करते पूर्ण विनाश।
कर्म नाशकर अपने सारे, करते सिद्ध शिला पर वास।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःसंज्ञा रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः (कर्म विनाशक)

दोहा– अष्ट कर्म को नाशकर, आप हुए भगवान।
पुष्पाञ्जलि करते 'विशद', करो मेरा कल्याण।।

द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन करते प्रभो, आये खाली हाथ।

झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

सम्यक् ज्ञान को ढ़कने वाला, ज्ञानावरणी कर्म कहा।
अज्ञानी बनकर के प्राणी, तीन लोक में भटक रहा।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणी कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावरण जीव के, दर्शन गुण का घात करे।
क्षायिक दर्शन की शक्ति को, कर्म जीव की पूर्ण हरे।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणी कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुख–दुख के झूले पर चढ़कर, फूले नहीं समाए हैं।
वेदनीय के द्वारा जग में, हम दुख सहते आए हैं।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं वेदनीय कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म मोहनीय से मोहित हो, जग में गोते खाए हैं।
सम्यक् श्रद्धा के अभाव में, चतुर्गति भटकाए हैं।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीय कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आयु कर्म दुख देने वाला, भव-भव में रोके रहता है।
उस आयु कर्म के दुख भारी, यह जीव वहाँ पर सहता है।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं आयु कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम कर्म शिल्पी के जैसी, तन की रचना करता है।
भाँति-भाँति के तन पाकर ये, जीव कष्ट कई सहता है।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं नामकर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोत्र कर्म से उच्च नीच का, भेद जीव यह पाता है।
चारों गतियों में प्राणी को, बारम्बार सताता है।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं गोत्र कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न डालता कर्म अनेकों, अन्तराय दुख देता है।
रहने वाले जग जीवों की, सुख-शांती हर लेता है।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं अन्तराय कर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म के कारण प्राणी, जग में कई दुख पाते हैं।
जन्म मरण कर तीन लोक में, बारम्बार भ्रमाते हैं।।
कर्म नाशकर अपने सारे, प्रभु ने पाया केवलज्ञान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हम जिन का गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः (षोडश कारण भावना)

दोहा- षोडष कारण भावना, भाते हैं जिन ईश।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, चरण झुकाकर शीश।।

तृतीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन् करते प्रभो, आये खाली हाथ।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छंद)

सम्यक् श्रद्धा हो जावे, सम्यग्दर्शन को पावे।
तव दर्श विशुद्धि आवे, नर भेद ज्ञान प्रगटावे।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो विनय महा गुणधारी, प्रभु बनते हैं अविकारी।
झुकने में आनन्द आया, निज आतम गुण प्रगटाया।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शील महाव्रत धारे, वह सारे काज सम्हारे।
हे शील महाव्रत धारी, हम पूजा करें तिहारी।।3।।

ॐ ह्रीं शीलव्रत भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो आतम ज्ञान जगावें, वे ही ज्ञानी कहलावें।
वे अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी, शिवपद पाते हैं योगी।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोग भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगों से नाता तोड़ा, आतम से नाता जोड़ा।
जो धर्म करे हर्षावे, संवेग भाव वे पावें।।5।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शक्ती नहीं छिपाते, वे त्याग धर्म को पाते।
हम त्याग भावना भाएँ, निज आतम गुण प्रगटाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्तिशः तप के धारी, मुनि करें निर्जरा भारी।
तप चेतन को चमकाए, तप करके मुक्ति पाए।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो साधु समाधि कराते, शिवपद की राह बनाते।
हम साधु समाधि पाएँ, अनुक्रम से शिवपुर जाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं साधु-समाधि भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैय्यावृत्ती शुभकारी, करते हैं जो नर-नारी।
सेवा का भाव जगावें, वे तीर्थंकर पद पावें।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् भक्ति सुखकारी, है जग में मंगलकारी।
भक्ति कर मुक्ति पाएँ, न भव वन में भटकाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य भक्ति जो करते, वह कोष पुण्य से भरते।
आचार्य की महिमा न्यारी, होते हैं शिवमग चारी।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो द्वादशांग के ज्ञाता, पाते जो प्रवचन माता।
मुनि उपाध्याय अविकारी, उनकी भक्ति शुभकारी।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वचन में श्रद्धा आये, प्रवचन भक्ति कहलाये।
प्रवचन भक्ति का धारी, मैटे निज विपदा सारी।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक पूरे करते, वह कर्म श्रृंखला हरते।
उनकी भक्ति हम पाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहार्य भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवमार्ग कहा शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।
शुभ जैन धर्म का धारी, मैटे निज विपदा सारी।।15।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य हृदय में धारे, जो द्वेष भाव निरवारे।
सच्ची जिनवर की वाणी, सारे जग में कल्याणी।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भव्य भावना भावे, वह मुक्ति वधु को पावे।
यह सोलह कारण जानो, शिवपद के हेतु मानो।।17।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्यादि षोडश भावना सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा- बाईस परीषह जय करें, दश धर्मों के ईश।
पुष्पाञ्जलि कर पूजते, चरण झुकाते शीश।।

चतुर्थ वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन् करते प्रभो, आये खाली हाथ।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

22 परिषहजय एवं 10 धर्मयुत जिन

(छन्द जोगीरासा)

क्षुधा परीषह जय पाते हैं, मुनि वृन्द होके अविकार।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहकर, करें साधना मुनि अनगार।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा परीषह जय करते हैं, वीतराग साधु अनगार।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, जग में होते मंगलकार।।2।।

ॐ ह्रीं तृषा परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुश्किल शीत परीषह जय है, वह भी सहते संत महान।
सम्यक् चारित्र पाने वाले, होते संयम के स्थान।।3।।

ॐ ह्रीं शीत परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्मी की लपटों को सहते, निष्पृह साधु हो अविकार।
उष्ण परीषह जय के धारी, जग में गाए मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं उष्ण परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दंशमशक परीषह जय करते, समता धारी संत प्रधान।
कठिन साधना करने वाले, तीन लोक में रहे महान।।5।।

ॐ ह्रीं दंशमशक परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्तर बाह्य लाज का कारण, नग्न परीषह सहते हैं।
ज्ञान ध्यान तप के धारी मुनि, समता भाव से रहते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं नग्न परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति परीषह जय के धारी, होते हैं साधु निर्ग्रन्थ।
विशद साधना करने वाले, करते हैं कर्मों का अन्त।।7।।

ॐ ह्रीं अरति परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हाव-भाव लखकर स्त्री के, समता से रहते अनगार।
स्त्री परिषह जय करते हैं, वीतराग साधु मनहार।।8।।

ॐ ह्रीं स्त्री परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्या परिषह जय धारी मुनि, पैदल करते सदा विहार।
यत्नाचार धरे चर्या में, जिनकी चर्या अपरम्पार।।9।।

ॐ ह्रीं चर्या परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान आदि को बैठें, विविक्त आसन के आधार।
निषद्या परीषह जय करते हैं, जैन मुनि होके अविकार।।10।।

ॐ ह्रीं निषद्या परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षिति शयन एकाशन में मुनि, करते हैं समता को धार।
शैय्या परिषह जय करते हैं, ज्ञानी ध्यानी ऋषि अनगार।।11।।

ॐ ह्रीं शैय्या परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कटु वचन बोलें यदि कोई, फिर भी न करते हैं रोष।
जैन मुनीश्वर समता वाले, परीषह जय धारी आक्रोश।।12।।

ॐ ह्रीं आक्रोश परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-छन्द)

वध करे यदि कोई प्राणी, न बोलें मुनि कटु वाणी।
मुनि बध परीषह जय धारी, हैं जग में मंगलकारी।।13।।

ॐ ह्रीं वध परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मुनि याचना धारी, परीषह जय करते भारी।
इनकी है महिमा न्यारी, होते हैं मंगलकारी।।14।।

ॐ ह्रीं याचना परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना लाभ प्राप्त कर पावें, मन में समता उपजावें।
मुनि अलाभ परीषह वाले, इस जग में रहे निराले।।15।।

ॐ ह्रीं अलाभ परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन में कोई रोग सतावे, मुनि शांत भाव को पावें।
जय रोग परीषह धारी, होते जग मंगलकारी।।16।।

ॐ ह्रीं रोग परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृण शूल आदि चुभ जावे, फिर भी मन समता आवे।
तृणस्पर्श जयी कहलावें, परिषह में न घबड़ावें।।17।।

ॐ ह्रीं तृणस्पर्श परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन मल से लिप्त हो जावे, मन में आकुलता आवे।
मुनि मल परीषह जय धारी, जग में रहते अविकारी।।18।।

ॐ ह्रीं मल परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्कार पुरस्कार जानो, परीषह जय धारी मानो।
हैं मुनिवरजी शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।।19।।

ॐ ह्रीं सत्कार पुरस्कार परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिवर शुभ प्रज्ञा पावें, प्रज्ञा में न हर्षावें।
मुनि प्रज्ञा परिषह धारी, जय पाते हैं अविकारी।।20।।

ॐ ह्रीं प्रज्ञा परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान परीषह गाया, मुनिवर ने जय शुभ पाया।
न खेद हृदय में लावें, मन में समता उपजावें।।21।।

ॐ ह्रीं अज्ञान परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिराज अदर्शन धारी, होते उसके जयकारी।
मुनिवर परिषह जय पावें, मन में समता उपजावें।।22।।

ॐ ह्रीं दर्शन परीषहजययुत श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दस धर्म (चौपाई)

जो भी क्रोध कषाय नशाए, उत्तम क्षमा धर्म वह पाए।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।23।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान हृदय से जिसके जाए, मार्दव धर्म वही प्रगटाए।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।24।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायाचार हटाए प्राणी, आर्जव पावे वह सद्ज्ञानी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।25।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ त्याग कर हो अविकारी, शौच धर्म पाए मनहारी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।26।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असद् कटुक शब्दों को त्यागे, सत्य धर्म में प्राणी लागे।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।27।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयावान इन्द्रिय जय धारी, संयम पावे वह अनगारी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।28।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा रोध करे जो भाई, उत्तम तप पावे सुखदाई।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।29।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग त्याग कर बनता दानी, उत्तम त्याग धरे वह ज्ञानी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।30।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में किंचित् राग न लावें, धर्माकिञ्चन प्राणी पावें।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।31।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज से जिन का ध्यान लगावें, उत्तम ब्रह्मचारी कहलावें।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।32।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाईस परीषह पर जय पाएँ, दश धर्मों से सहित कहाएँ।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।33।।

ॐ ह्रीं द्वाविंशति परीषहजय दशधर्म सहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलयः

दोहा– दोष अठारह से रहित, छियालिस गुण के नाथ।
पूजा करते भाव से, पुष्पाञ्जलि के साथ।।

पंचम वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(स्थापना)

हे सुपार्श्व ! तुम लोक में, बने श्री के नाथ।
आह्वानन् करते प्रभो, आये खाली हाथ।
झुका चरण में आपके, मेरा भी यह माथ।
तव चरणों के भक्त हम, ले लो अपने साथ।
करते हैं हम प्रार्थना, करो प्रभु स्वीकार।
भव सागर से भक्त को, शीघ्र लगाओ पार।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

18 दोषरहित जिन (चौपाई)

क्षुधा रोग को पूर्ण नशाए, अतः प्रभु शिव पदवी पाए।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ति पथ के हे शिवगामी !।।1।।

ॐ ह्रीं क्षुधादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृषा दोष के नाशनकारी, तीर्थंकर जिन है अविकारी
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ति पथ के हे शिवगामी !।।2।।

ॐ ह्रीं तृषादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म दोष को खोने वाले, केवलज्ञानी होने वाले।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ति पथ के हे शिवगामी !।।3।।

ॐ ह्रीं जन्मदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जरा दोष के होते नाशी, अनुपम केवलज्ञानी प्रकाशी।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ति पथ के हे शिवगामी !।।4।।

ॐ ह्रीं जरादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विस्मय दोष नहीं रह पाए, जो नर केवल ज्ञान जगाए।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ति पथ के हे शिवगामी !।।5।।

ॐ ह्रीं विस्मयदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरति दोष को पूर्ण नशाया, जिनने तीर्थंकर पद पाया।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ति पथ के हे शिवगामी !।।6।।

ॐ ह्रीं अरतिदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होते खेद दोष के नाशी, बनते सिद्ध शिला के वासी।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ति पथ के हे शिवगामी !।।7।।

ॐ ह्रीं खेददोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग दोष सारा नश जाए, जो तीर्थंकर पदवी पाए।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ति पथ के हे शिवगामी !।।8।।

ॐ ह्रीं रोगदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक नशाने वाले प्राणी, होते हैं शुभ केवल ज्ञानी।
चरण पूजते हम हे स्वामी !, मुक्ति पथ के हे शिवगामी !।।9।।

ॐ ह्रीं शोकदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छंद)

मद दोष नहीं रह पाए, जो केवल ज्ञान जगाए।
वह अर्हत पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।10।।

ॐ ह्रीं मददोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मोह दोष को खोवें, वे केवल ज्ञानी होवें।
वह अर्हत पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।11।।

ॐ ह्रीं मोहदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भय दोष नहीं रह पाये, जो केवल ज्ञान जगायें।
वह अर्हत पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।12।।

ॐ ह्रीं भयदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं निद्रा दोष के त्यागी, जिन वीतराग विज्ञानी।
वह अर्हत पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।13।।

ॐ ह्रीं निद्रादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिंता जो पूर्ण नशाएँ, वे तीर्थंकर पद पाएँ।
वह अर्हत पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।14।।

ॐ ह्रीं चिंतादोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु स्वेद दोष के नाशी, हो जाते शिवपुर वासी।
वह अर्हत पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।15।।

ॐ ह्रीं स्वेददोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो जाए राग की हानी, बन जाते केवलज्ञानी।
वह अर्हत पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।16।।

ॐ ह्रीं रागदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन रहे द्वेष परिहारी, केवल ज्ञानी अविकारी।
वह अर्हत पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।17।।

ॐ ह्रीं द्वेषदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मरण दोष को खोते, फिर जिन तीर्थंकर होते।।
वह अर्हत पदवी पाते, इस जग से पूजे जाते।।18।।

ॐ ह्रीं मरणदोष रहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म के दस अतिशय अर्घ्य

दश अतिशय जनमत जिन पाय, पूजत सुर नर हर्ष मनाय।
स्वेद रहित जिनवर तन पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।19।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निःस्वेदत्वसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल नहिं होय प्रभु तन मांहि, निर्मल रही देह सुख दाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।20।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्मलत्वसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम चतुष्क संस्थान जो पाय, हीनाधिक तन होवे नाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।21।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समचतुररस्रसंस्थान सहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र वृषभ संहनन जो होय, अद्भुत शक्ति धारे सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।22।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वज्रवृषभनाराचसंहनन सहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगंधित पाते देह, भव्य जीव सब पावें स्नेह।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।23।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौगन्ध्यसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयकारी सुंदर रूप, फीके पड़ें जगत् के भूप।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।24।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा रूपसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण एक सहस हैं आठ, सहस नाम जो पढ़ते पाठ।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।25।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौलक्षण्य सहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत रक्त प्रभु के तन होय, वात्सल्य महिमा युत सोय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।26।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा श्वेतरक्तसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित मित प्रिय वचन सुखदाय, सुनकर हर प्राणी सुख पाय।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।27।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रियहितवादित्वसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अतुल्य पाये जिनदेव, जग के जीव करें पद सेव।
जन्म लेत यह अतिशय पाय, उन जिन पद हम अर्घ्य चढ़ाय।।28।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्रमितवीर्यसहजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान के अतिशय अर्घ्य

(अडिल्ल छंद)

अतिशय जिनवर केवलज्ञान के दश कहे।
योजन शत् इक में सुभिक्षता हो रहे।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।29।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गव्यूतिशतचतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवल ज्ञानी होय, गमन नभ में करें।
प्रभु चले जिस ओर, देवगण अनुसरें।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।30।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गगन गमनत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर का हो गमन, सदा हितदाय जी।
तिस थानक नहिं, कोय मारने पाय जी।।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।31।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर नर पशु जड़ कृत उपसर्ग चउ कहे।
इनकी बाधा प्रभु के ऊपर नहीं रहे।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।32।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षुधा आदि की पीड़ा से जग दुख सह्यो।
सो जिन कवलाहार जान सब पर-हर्‌यो।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।33।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में श्री जिनवर स्थित रहे।
पूर्व दिशा मुख होय चतुर्दिक दिख रहे।।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।34।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राकृत संस्कृत सकल देश भाषा कही।
सब विद्या अधिपत्य सकल जानत सही।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।35।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वविद्येश्वर घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मूर्तिक तन पुद्‌गल के अणु से बन रह्यो।
पड़े नहीं छाया, महा अचरज भयो।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।36।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अच्छायत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर के नख केश, नाहिं वृद्धि करें।
ज्यों के त्यों ही रहें, प्रभु यह गुण धरें।

केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।37।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समाननखकेशत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रों में टिमकार, केश भौं नहिं हिलें।
दृष्टि नाशा रहे, कोई हेतु मिलें।
केवलज्ञान का अतिशय जिनवर पाए हैं।
सुर नर पशु चरणों में शीश झुकाए हैं।।38।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अपक्ष्मस्पंदत्व घातिक्षयजातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवकृत अतिशय अर्घ्य

अतिशय देवों कृत कहे, चौदह सर्व महान्।
सर्व जीव को सुख करे, अर्धमागधी बान।।39।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वार्धमागधीय भाषा देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों में मैत्री रहे, जहँ जिन की थिति होय।
देव निमित्तक जानिए, अतिशय जिनके जोय।।40।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्व जीव मैत्रीभाव देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फूल फलें षट् ऋतु के, जहँ जिन की थिति होय।
देवों का तो निमित्त है, अतिशय जिनका सोय।।41।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पणवत् भूमी रहे, जहँ जिन करें विहार।
अतिशय देवों कृत रहा, होय मंगलाचार।।42।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंद सुगंधित शुभ सुखद, पुनि-पुनि चले बयार।
अतिशय श्री जिनदेव का, करता मंगलकार।।43।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव आनंदमय, होवे मंगलकार।
अतिशय होवे यह परम, प्रभु का होय विहार।।44।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय से जिनदेव के, भू गत कंटक होय।
ये अतिशय भी जहाँ में, देव निमित्तक सोय।।45।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टि हो, अतिशय करते देव।
महिमा यह जिनदेव की, सेवा करें सदैव।।46।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव रचें पद तल कमल, गगन गमन जब होय।
अतिशय श्री जिनदेव का, देव निमित्तक सोय।।47।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चरण कमल तल रचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुखकारी सब जीव को, निर्मल दिश आकाश।
देव करें भक्ति विमल, अतिशय जिन सुख राश।।48।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गगन निर्मल देवोपनीतातिशय सहित श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धूम मेघ वर्जित सुभग, सब दिश निर्मल होय।
देव करें भक्ति परम, अतिशय जिन को जोय।।49।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्व दिशा निर्मल देवोपनीतातिशय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति के वश देव शुभ, करते जय-जयकार।
पृथ्वी से आकाश तक, होवे मंगलकार।।50।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वाण्ह यक्ष आगे चले, धर्म चक्र धर शीश।
अतिशय श्री जिनदेव का, चरण झुकें शत् ईश।।51।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा धर्म चक्र चतुष्टय देवोपनीतातिशय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल द्रव्य वसु देवगण, लेकर चलते साथ।
अतिशय कर सुर नर सभी, चरण झुकाते माथ।।52।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अष्ट मंगल द्रव्य देवोपनीतातिशय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्त चतुष्टय *(चौपाई)*

कर्म दर्शनावरणी नाशे, दर्शन गुण जिन प्रभु प्रकाशे।
देखे सर्व चराचर सारा, निज स्वरूप को निज में धारा।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनगुण प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो निज आतम ज्ञान जगावें, केवलज्ञान स्वयं प्रगटावें।
सर्व चराचर को वह जाने, पर वस्तु को पहिचाने।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।54।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुण प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह कर्म जग में दुखदायी, वह विनाश हो जावे भाई।
गुण सम्यक्त्व प्रकट हो जावे, सुख अनन्त प्राणी यह पावें।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।55।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुखप्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधाओं ने डाला डेरा, अन्तराय ने हमको घेरा।
हे अनन्त शक्ति के धारी, मेटो विपदा शीघ्र हमारी।।
जिन तीर्थंकर केवलज्ञानी, जिनकी वाणी जग कल्याणी।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।56।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुणप्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य *(शम्भू छंद)*

समवशरण में तरु अशोक सब, शोक हरण करता भाई।
जिनवर की महिमा दिखलाए, मणि मुक्तायुत सुखदाई।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।57।।

ॐ ह्रीं अशोकतरु सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

तीन छत्र महिमा गाते प्रभु, तीन लोक के नाथ रहे।
यह सारा जग महिमा गाये, प्रभु की महिमा कौन कहे।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।58।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

है रत्न जड़ित सिंहासन शुभ, प्रभु उस पर अधर विराज रहे।
महिमा अनुपम दिखलाता है, प्रभु तीन लोक में पूज्य रहे।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।59।।

ॐ ह्रीं सिंहासन सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

प्रभु दिव्य ध्वनि के द्वारा शुभ, तत्त्वों का शुभ उपदेश करें।
निज भाषा में समझो प्राणी, जीवों मन का सब क्लेश हरें।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।60।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शुभ देव दुन्दुभि भव्यों को, प्रभु की महिमा बतलाती है।
जय जय की गूँज उठे नभ में, जिन की महिमा को गाती है।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।61।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

नभ में शुभ सुमन बरसते हैं, प्रभु का यश मंगल गाते हैं।
अपनी अनुपम आभा द्वारा, जो चतुर्दिशा महकाते हैं।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।62।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

लज्जित हो जाते रवि चन्द्र, भामण्डल को लखकर सारे।
जो भव दिखलाते भव्यों को, प्रभु ने कई भव्य स्वयं तारे।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।63।।

ॐ ह्रीं भामण्डल सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुर चँवर ढुराते हैं अनुपम, जो चन्दा जैसे चमक रहे।
प्रभु की आभा को दिखलाते, प्रभु सूरज जैसे दमक रहे।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।64।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठिचामर सत्प्रातिहार्यसहिताय श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोष अठारह रहित जिनेश्वर, छियालिस गुण प्रगटाते हैं।
तीन लोक तीनों कालों में, जग से पूजे जाते हैं।।
जिन सुपार्श्व के पद वंदन से, लोगों के संकट घटते हैं।
जो कर्म अनादि लगे 'विशद', वह कर्म शीघ्र ही कटते हैं।।65।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहित षट् चत्वारिंशद गुण संयुक्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐम् अर्हं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– सप्तम तीर्थंकर हुए, जिन सुपार्श्व है नाम।
जयमाला गाते यहाँ, करके चरण प्रणाम।।

(मोतियादाम छंद)

त्रैलोक हितंकर धर्म प्रधान, धरें सदृष्टि जीव महान्।
करें निज दर्शन की पहिचान, तवै हों जीवों को निज भान।।
करें जब प्राणी पुण्य विशाल, सुपद आए तब पूज्य त्रिकाल।
तजें प्रभु जी जब स्वर्ग विमान, तवैं हो प्रभु का गर्भकल्याण।।
करें रत्नों की वृष्टि महान्, स्वर्गों से आके देव प्रधान।
प्रभु जब जन्मे तव सुर आय, ऐरावत साथ में अपने ल्याय।।
शचि शिशु को फिर लेकर आय, सुइन्द्र तवे प्रभु दर्शन पाय।
तवै सुर मेरु गिरि ले जाय, खुशी हो प्रभु का न्हवन कराय।।
प्रभु के पग में स्वस्तिक देख, किए प्रभु का शुभ नाम उल्लेख।
गये सुरराज बनारस जाय, प्रभु को राजमहल पहुँचाए।।
प्रभु कई पाए भोग विलास, तजे फिर भोगन की प्रभु आस।
किए प्रभु जी चउ कर्म विनाश, लिए तब केवल ज्ञान प्रकाश।।
तवै फिर आये इन्द्र अपार, किए प्रभु की तब जय-जयकार।
शुभ समवशरण रचना सुप्रधान, कुबेर जो कीन्हें श्रेष्ठ महान्।।
खिरी ध्वनि प्रभु की अपरम्पार, किए प्रभु तत्त्वों का विस्तार।
जगे कई जीवन में श्रद्धान, जगाए वह सब सम्यक् ज्ञान।
सु सम्यक् चारित्र का स्वरूप, रत्नत्रय पाए भव्य अनूप।।
किए प्रभु जी फिर ध्यान विशेष, नशाए क्षण में कर्म अशेष।
विशद हम जपते तव गुण सार, प्रभु हमको भवसागर तार।।
बने शरणागत दीन दयाल, करी तव चरणों में गुण माल।
जगी है मन में मेरे आस, मिले हमको भी शिवपुर वास।।

(छन्द : धत्तानन्द)

जय-जय जिन स्वामी त्रिभुवन नामी, जन्म मृत्यु का रोग हरो।
मुक्ति पथगामी शिव अनुगामी, हमको भी भवपार करो।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्री सुपार्श्व के पद युगल, जो पूजे धर ध्यान।
'विशद' ज्ञान पाए शुभम्, पाए पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः

श्री 1008 सुपार्श्वनाथ भगवान की आरती

(तर्ज- आज करें हम.....)

जिन सुपार्श्व की करते हैं शुभ, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए हैं हम, जिनवर के दरबार।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।1।।
स्वर्ग लोक से इन्द्र अनेकों, नगर बनारस आए।
रत्न वृष्टि करके हर्षित हो, नगरी खूब सजाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।2।।
पृथ्वीमति माता की कुक्षि, को प्रभु धन्य बनाए।
पिता प्रतिष्ठित सुनकर के तब, मन ही मन हरषाए।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।3।।
षष्ठी शुक्ला भादो को प्रभु, स्वर्ग से चयकर आये।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस को प्रभु का, जन्म कल्याण मनाये।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।4।।
दो सौ धनुष की रही ऊँचाई, लक्षण स्वस्तिक जानो।
बीस लाख पूरब की आयु, जिन सुपार्श्व की मानो।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।5।।

ज्येष्ठ सुदी बारस को प्रभु ने, उत्तम तप को पाया।
षष्ठी कृष्ण माह फाल्गुन को, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।6।।
करें आरती 'विशद' भाव से, वह सौभाग्य जगाएँ।
सुख-शान्ति आनन्द प्राप्त कर, अन्तिम शिवपद पाएँ।।
हो जिनवर, हम सब उतारें तेरी आरति-2 ।।7।।

श्री सुपार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, जग में अपरम्पार।
चैत्य चैत्यालय धर्म जिन, आगम मंगलकार।।
चालीसा लिखते यहाँ, जिन सुपार्श्व के नाम।
तीन योग से चरण में, करके विशद प्रणाम।।

(चौपाई)

जिन सुपार्श्व महिमा के धारी, तीन लोक में मंगलकारी।
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के अनुपम त्राता।।
मोह मान माया को त्यागा, केवल ज्ञान हृदय में जागा।
अतः आपके गुण सब गाते, पद में सादर शीश झुकाते।।
जम्बू द्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।
काशी देश बनारस नगरी, प्रजा सुखी जानो तुम सगरी।।
सुप्रतिष्ठ राजा शुभ गाए, पृथ्वी सेना रानी पाए।
भादव शुक्ला षष्ठी जानो, प्रत्यूष बेला शुभ पहिचानो।।
मध्यम ग्रैवेयक से चय आये, समुद्र विमान वहाँ पर पाए।
विशाख नक्षत्र रहा शुभकारी, गर्भ प्रभु पाए मनहारी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, रत्नों की वृष्टी करवाए।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाख बखानो।।
अग्निमित्र योग शुभकारी, तुला राशि जानो मनहारी।
शुक्र राशि का स्वामी गाया, जिसमें जन्म प्रभु ने पाया।।

हरित वर्ण तन का शुभ जानो, स्वस्तिक चिह्न आपका मानो।
इन्द्रराज चरणों में आया, पद में सादर शीश झुकाया।।
सहस आठ कलशा शुभ लाया, मेरू गिरि पर न्हवन कराया।
बीस लाख पूरब की भाई, आयु पाये हैं सुखदायी।।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, प्रभु के तन की मंगलदायी।
पतझड़ देख भावना भाए, मन में प्रभु वैराग्य जगाए।।
ज्येष्ठ शुक्ल बारस पहिचानो, सायंकाल श्रेष्ठ शुभ मानो।
विशाख नक्षत्र श्रेष्ठ शुभ पाए, देव स्वर्ग से चलकर आए।।
पालकी श्रेष्ठ मनोगति लाए, सहस्राभ वन में पहुँचाए।
शिरीष वृक्ष रहा शुभ भाई, धनुष श्रेष्ठ दो सौ ऊँचाई।।
एक सहस्र भूपति संग आए, प्रभु के साथ में दीक्षा पाए।
सोम खेट नगरी शुभ जानो, महेन्द्रदत्त नृप के गृह मानो।।
प्रभु आहार क्षीर की कीन्हें, विषयों की आशा तज दीन्हें।
शुभ छद्मस्थ काल सुखदायी, प्रभु नौ वर्ष बताया भाई।।
फाल्गुन कृष्णा षष्ठी जानो, तिथि शुभ केवलज्ञान की मानो।
सौ-सौ इन्द्र शरण में आए, चरणों में नत शीश झुकाए।।
धनपति साथ में इन्द्र के आया, जो शुभ समवशरण बनवाया।
सौ योजन का है शुभकारी, तरुवर श्रेष्ठ अशोक मनहारी।।
गणधर पञ्चानवे शुभ गाये, बलदत्त प्रथम गणी कहलाए।
मुनिवर ढाई लाख बतलाए, जो शुभ उत्तम संयम पाए।।
काली यक्षी प्रभु की गाई, यक्ष विजय था अनुपम भाई।
गिरि सम्मेद शिखर जिन आए, कूट प्रभास प्रभुजी पाए।।
फाल्गुन वदि साते शुभ जानो, शुभ नक्षत्र विशाखा मानो।
खड्गासन से श्री जिन स्वामी, जिन मुक्ति पाए अनुगामी।।
जिनवर श्री सुपार्श्व कहलाए, जो उपसर्ग जयी शुभ गाए।
प्रभु की प्रतिमाएँ शुभकारी, इस जग में अति मंगलकारी।।

कई इक जगह नागफण वाली, प्रतिमाएँ शुभ रही निराली।
प्राणी शुभ जिन दर्शन पाएँ, शिवपद का जो बोध कराएँ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
शुभ तन मन सौभाग्य पा, बने श्री के नाथ।।
सुख समृद्धि बुद्धि बल, बढ़ता अपने आप।
'विशद' ज्ञान जागे परम, कट जाते हैं पाप।।

प्रशस्ति

मध्य लोक के मध्य है, जम्बू द्वीप महान्।
भारत देश के मध्य में, उत्तर देश प्रधान।।
जिला श्रेष्ठ मेरठ कहा, भारत में विख्यात।
तीर्थ हस्तिनापुर रहा, जिसमें होवे ज्ञात।।
शान्ति कुन्थु जिन अरह के, हुए तीन कल्याण।
समवशरण जिन मल्लि का, आया जिस स्थान।।
दुर्गाबाड़ी सदर में, हुआ ग्रीष्म अवकाश।
लेखन चिन्तन मनन में, समय बिताया खास।।
वीर निर्वाण पच्चीस सौ, अड़तीस है शुभकार।
दो हजार बारह शुभम्, मई माह मनहार।।
जेठ माह की अष्टमी, दिन है शुभ रविवार।
जिन सुपार्श्व की अर्चना, हुई सुमंगलकार।।
पावन अवसर पर विशद, लिक्खा गया विधान।
शुभ भावों के साथ में, किया प्रभु गुणगान।।
लघु धी से जो भी लिखा, जानो यही प्रमाण।
भव्य जीव पढ़के इसे, पावे सम्यक् ज्ञान।।
कवि नहीं वक्ता नहीं, मैं हूँ लघु आचार्य।
'विशद' धर्मयुत आचरण, करें जनात् जन आर्य।।
पूजा के फल से सभी, होते कर्म विनाश।
सर्व कर्म का नाश हो, होवे आत्म प्रकाश।।